SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.06

तेन्दूपत्ता संग्रहण के आर्थिक कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई (KCG) जिले की संग्रहण समितियों के विशेष संदर्भ में)

पूर्वेश कुमार बांधव[1]*, हिरेंद्र ठाकुर[1], आशीष गहने[2] एवं गोपाल कृष्ण यादव[2]

[*1,2]वाणिज्य विभाग, शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोंगरगढ़, छत्तीसगढ़, भारत।

[1]वाणिज्य विभाग, रानी रश्मिदेवी सिंह शासकीय महाविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़, भारत।

[2]वाणिज्य विभाग, शासकीय लाल श्याम शाह महाविद्यालय, छत्तीसगढ़, भारत।

ई-मेल: purveshbandhav001@gmail.com

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध-पत्र खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई (KCG) जिले में तेन्दूपत्ता संग्रहण से जुड़े आर्थिक कारकों, पारिश्रमिक, सामाजिक सुरक्षा और कल्याणकारी योजनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करता है। तेन्दूपत्ता छत्तीसगढ़ के वनाश्रित एवं जनजातीय परिवारों के लिए ग्रीष्मकालीन अवधि में त्वरित नकद आय का महत्वपूर्ण स्रोत है। उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर वित्तीय वर्ष 2023-24 और 2024-25 की तुलना से स्पष्ट होता है कि संग्रहण दर ₹4,000 से बढ़कर ₹5,500 प्रति मानक बोरा हो गई, जिससे प्रति मानक बोरा ₹1,500 अर्थात 37.50% की वृद्धि दर्ज की गई। KCG जिले में संग्रहण मात्रा 29,500 मानक बोरा से घटकर 28,000 मानक बोरा रही, फिर भी बढ़ी हुई दरों के कारण संग्रहणकर्ता परिवारों की नकद आय क्षमता में सुधार की संभावना मजबूत हुई। बीमा दावा निपटान 112 से बढ़कर 124 परिवारों तक पहुंचा तथा उच्च शिक्षा सहायता के लाभार्थी 195 से 240+ तक बढ़े। अध्ययन का निष्कर्ष है कि तेन्दूपत्ता संग्रहण केवल मौसमी रोजगार नहीं, बल्कि ग्रामीण आय, सामाजिक सुरक्षा और मानव पूंजी निर्माण से जुड़ा एक महत्वपूर्ण आर्थिक तंत्र है।

मुख्य शब्द: तेन्दूपत्ता, लघु वनोपज, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, KCG जिला, सामाजिक सुरक्षा, संग्रहण दर, जनजातीय आजीविका

1. प्रस्तावना (Introduction)

छत्तीसगढ़ राज्य अपनी भू-आकृतिक विविधता, सघन वन संपदा और समृद्ध जनजातीय संस्कृति के कारण देश के महत्वपूर्ण वन-आधारित राज्यों में गिना जाता है। राज्य के ग्रामीण एवं जनजातीय अंचलों में आजीविका का एक बड़ा भाग गैर-लकड़ी वनोपज (Non-Timber Forest Products: NTFPs) पर आधारित है। इन वनोपजों में तेन्दूपत्ता (Diospyros melanoxylon) का विशेष महत्व है, क्योंकि यह संग्रहणकर्ताओं को अल्प अवधि में नकद आय उपलब्ध कराता है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष तरलता पैदा करता है।

तेन्दूपत्ता संग्रहण सामान्यतः अप्रैल से जून के बीच किया जाता है। इस समय कृषि कार्य अपेक्षाकृत कम रहता है, इसलिए ग्रामीण श्रमिकों के लिए यह गतिविधि पूरक आय, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी हुई है। स्थानीय स्तर पर इसे "हरा सोना" कहा जाना इसके आर्थिक महत्व को स्पष्ट

करता है। KCG जैसे नवगठित जिले में, जहां वनांचल और ग्रामीण आबादी का बड़ा भाग लघु वनोपज पर निर्भर है, तेन्दूपत्ता संग्रहण का सूक्ष्म आर्थिक अध्ययन नीति-निर्माण की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है।

राज्य सरकार द्वारा संग्रहण दर, शिक्षा प्रोत्साहन, बीमा सहायता और चरण पादुका जैसी योजनाएं संग्रहणकर्ता परिवारों को आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती हैं। इसके बावजूद क्षेत्रीय स्तर पर यह समझना आवश्यक है कि पारिश्रमिक वृद्धि, बीमा दावा निपटान और शैक्षणिक सहायता जैसे कारक परिवारों की वास्तविक आर्थिक स्थिति पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं। इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन KCG जिले की संग्रहण समितियों एवं संग्रहण केंद्रों के संदर्भ में तैयार किया गया है।

2. अध्ययन की पृष्ठभूमि एवं औचित्य

तेन्दूपत्ता का उपयोग मुख्यतः बीड़ी उद्योग में होता है, किंतु इसका आर्थिक महत्व केवल उद्योग तक सीमित नहीं है। संग्रहण कार्य में बड़ी संख्या में ग्रामीण, विशेषकर महिलाएं और वनाश्रित समुदाय, प्रत्यक्ष रूप से शामिल रहते हैं। संग्रहण दर में वृद्धि का सीधा प्रभाव पारिवारिक आय, ऋण पर निर्भरता, बच्चों की शिक्षा और घरेलू उपभोग पर पड़ता है।

KCG जिला प्रशासनिक रूप से नया जिला है। ऐसे में जिले-विशेष के आंकड़ों पर आधारित अध्ययन अभी सीमित हैं। उपलब्ध राज्य-स्तरीय अध्ययनों से सामान्य प्रवृत्तियों की जानकारी मिलती है, किंतु स्थानीय संग्रहण समितियों, ग्राम-स्तरीय चुनौतियों और योजना-लाभ के वास्तविक प्रभाव को समझने के लिए जिला-स्तरीय विश्लेषण आवश्यक है।

3. शोध साहित्य का पुनरावलोकन (Review of Literature)

लघु वनोपज पर निर्भरता और वनाश्रित परिवारों की आर्थिक स्थिति पर किए गए पूर्व अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि निम्न आय वर्ग तथा भूमिहीन परिवारों के लिए NTFPs संकट के समय आय-सुरक्षा का कार्य करते हैं। ज्योतिष एवं सत्यपालन (2005) ने पश्चिमी घाट के संदर्भ में पाया कि कम आय वाले परिवार वन-उत्पादों पर अपेक्षाकृत अधिक निर्भर रहते हैं।

उसरेठे, मुकेश कुमार के अध्ययन में छिन्दवाड़ा जिले की तामिया एवं सौंसर तहसील के संदर्भ में बताया गया कि तेन्दूपत्ता संग्रहण के व्यवस्थित होने से ग्रामीण परिवारों की मौद्रिक आय में सुधार हुआ और जीवन-स्तर में गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिला।

साहू, दीप्ति (2025) ने छत्तीसगढ़ में तेंदूपत्ता संग्रहण एवं विपणन का विश्लेषण करते हुए उल्लेख किया कि समर्थन मूल्य, बोनस और कल्याणकारी नीतियों के कारण संग्राहकों को आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा है। साथ ही, उन्होंने तेन्दूपत्ता के गैर-पारंपरिक, औषधीय और औद्योगिक उपयोगों के विस्तार की आवश्यकता पर बल दिया।

पूर्व साहित्य से यह स्पष्ट है कि तेन्दूपत्ता केवल वन-उत्पाद नहीं, बल्कि ग्रामीण आजीविका, सामाजिक सुरक्षा और स्थानीय अर्थव्यवस्था से जुड़ा हुआ बहु-आयामी संसाधन है। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-रिक्ति को KCG जिले के संदर्भ में भरने का प्रयास करता है।

4. शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. KCG जिले के तेन्दूपत्ता संग्रहणकर्ताओं की वर्तमान आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन करना।
2. संग्रहण दर, पारिश्रमिक और आय-स्तर में हुए परिवर्तनों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
3. सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, शिक्षा सहायता, बीमा लाभ और चरण पादुका योजना के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. संग्रहणकर्ताओं द्वारा सामना की जाने वाली मौसमी, शारीरिक, भंडारण और विपणन संबंधी चुनौतियों की पहचान करना।
5. तेन्दूपत्ता संग्रहण तंत्र को अधिक सुरक्षित, लाभकारी और सतत बनाने हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

5. शोध परिकल्पनाएं (Hypotheses)

क्र.	शून्य परिकल्पना (H0)	वैकल्पिक परिकल्पना (H1)
1	तेन्दूपत्ता संग्रहण से प्राप्त आय का संग्राहक परिवारों के आर्थिक स्तर पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता।	तेन्दूपत्ता संग्रहण से प्राप्त आय संग्राहक परिवारों के आर्थिक स्तर में महत्वपूर्ण सकारात्मक सुधार करती है।
2	शिक्षा प्रोत्साहन एवं छात्रवृत्ति योजना का संग्राहक परिवारों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।	शिक्षा प्रोत्साहन एवं छात्रवृत्ति से बच्चों में शिक्षा के प्रति रुझान तथा उच्च शिक्षा में नामांकन बढ़ता है।
3	जीवन बीमा एवं दुर्घटना बीमा योजनाओं का संकट के समय परिवारों पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता।	जीवन बीमा एवं दुर्घटना बीमा योजनाएं संकट के समय संग्रहणकर्ता परिवारों के लिए सुरक्षात्मक आर्थिक सहारा बनती हैं।

6. शोध प्रविधि (Research Methodology)

6.1 शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रारूप पर आधारित है। इसमें उपलब्ध क्षेत्रीय/विभागीय आंकड़ों का वर्षवार तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य केवल आंकड़ों का विवरण देना नहीं, बल्कि उनके आर्थिक अर्थ और नीति-गत संकेतों को स्पष्ट करना है।

6.2 आंकड़ों के स्रोत

- प्राथमिक आंकड़े: चयनित संग्रहणकर्ताओं, संग्रहण केंद्रों और स्थानीय स्तर पर उपलब्ध फील्ड जानकारी से प्राप्त विवरण।
- द्वितीयक आंकड़े: वन विभाग, जिला वनोपज सहकारी यूनियन मर्यादित खैरागढ़, प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों और आधिकारिक प्रतिवेदनों से प्राप्त सूचनाएं।
- विश्लेषण इकाई: संग्रहण दर, संग्रहण मात्रा, बीमा दावा निपटान, शिक्षा सहायता और सुरक्षा-संबंधी योजनाएं।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

6.3 अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन का क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई (KCG) जिले की प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों, संग्रहण केंद्रों और उनसे संबद्ध ग्रामों तक सीमित है। यह क्षेत्र वन संसाधन, ग्रामीण श्रम और लघु वनोपज आधारित आजीविका की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

6.4 आंकड़ा विश्लेषण की तकनीक

अध्ययन में सारणीयन, प्रतिशतता, वर्षवार तुलना और प्रवृत्ति-आधारित व्याख्या का उपयोग किया गया है। प्रतिशत परिवर्तन की गणना निम्न सूत्र से की गई है:

प्रतिशत परिवर्तन = [(वर्तमान वर्ष का मान – पूर्व वर्ष का मान) / पूर्व वर्ष का मान] × 100

7. समंकों का विश्लेषण एवं व्याख्या (Data Analysis and Interpretation)

वित्तीय वर्ष 2023-24 और 2024-25 के उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर छत्तीसगढ़ राज्य एवं KCG जिले में तेन्दूपत्ता संग्रहण से संबंधित प्रमुख आर्थिक एवं कल्याणकारी संकेतकों का तुलनात्मक विवरण निम्न सारणी में प्रस्तुत है।

© Shiksha Samvad | Received: 25 May-2026 | Accepted: 01 June - 2026 | Published: 05 June - 2026

क्र.	योजना / विवरण	क्षेत्र / स्तर	2023-24	2024-25	मुख्य बदलाव / स्थिति
1	तेन्दूपत्ता संग्रहण दर (मजदूरी)	छत्तीसगढ़ राज्य स्तर	₹4,000	₹5,500	₹1,500 प्रति मानक बोरा की वृद्धि
2	तेन्दूपत्ता संग्रहण दर (मजदूरी)	खैरागढ़ (KCG) जिला	₹4,000	₹5,500	जिला स्तर पर समान रूप से लागू
3	कुल संग्रहण लक्ष्य / मात्रा	छत्तीसगढ़ राज्य स्तर	13.00 लाख मानक बोरा	12.50 लाख मानक बोरा	मौसम एवं पत्तों की उपलब्धता पर आधारित उतार-चढ़ाव
4	कुल संग्रहण मात्रा	खैरागढ़ (KCG) जिला	29,500 मानक बोरा	28,000 मानक बोरा	स्थानीय समितियों द्वारा सुचारू संग्रहण
5	शहीद महेंद्र कर्मा सुरक्षा योजना	18-50 वर्ष (सामान्य मृत्यु)	₹2,00,000	₹2,00,000	सहायता राशि यथावत
6	शहीद महेंद्र कर्मा सुरक्षा योजना	18-50 वर्ष (दुर्घटना मृत्यु)	₹4,00,000	₹4,00,000	DBT भुगतान प्रक्रिया पर जोर
7	बीमा दावा निपटान	खैरागढ़ (KCG) जिला	112 परिवार	124 परिवार	दावा भुगतान/निपटान में तेजी
8	शिक्षा प्रोत्साहन (मेधावी छात्र)	10वीं/12वीं: 75%-84.9%	₹15,000	₹15,000	एकमुश्त राशि सीधे खाते में हस्तांतरित
9	शिक्षा प्रोत्साहन (मेधावी छात्र)	10वीं/12वीं: 85% से अधिक	₹25,000	₹25,000	प्रतिभाशाली बच्चों को उच्च शिक्षा संबल
10	उच्च शिक्षा सहायता (UG/PG)	KCG जिला	195 छात्र लाभान्वित	240+ छात्र लाभान्वित	कॉलेज स्तर पर पंजीयन/लाभार्थी संख्या में वृद्धि
11	चरण पादुका योजना	खैरागढ़ (KCG) जिला	स्थगित / बंद	32,000 जोड़ी	जून 2025 से योजना का पुनः शुभारंभ

सारणी 1. वित्तीय वर्ष 2023-24 एवं 2024-25 में तेन्दूपत्ता संग्रहण और कल्याणकारी संकेतकों का तुलनात्मक विवरण

SHIKSHA SAMVAD

© Shiksha Samvad | Received: 25 May-2026 | Accepted: 01 June - 2026 | Published: 05 June - 2026

7.1 प्रमुख संकेतकों का प्रतिशत परिवर्तन

संकेतक	2023-24	2024-25	प्रतिशत परिवर्तन	व्याख्या
संग्रहण दर	₹4,000	₹5,500	+37.50%	संग्राहकों की नकद आय क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि
राज्य स्तरीय संग्रहण मात्रा	13.00 लाख बोरा	12.50 लाख बोरा	-3.85%	मौसम और पत्ती उपलब्धता का प्रभाव
KCG संग्रहण मात्रा	29,500 बोरा	28,000 बोरा	-5.08%	मात्रा में हल्की कमी, किंतु दर वृद्धि से आय प्रभाव संतुलित
बीमा दावा लाभान्वित परिवार	112	124	+10.71%	सामाजिक सुरक्षा की पहुंच में वृद्धि
उच्च शिक्षा सहायता लाभार्थी	195	240+	कम-से-कम +23.08%	शिक्षा की ओर सकारात्मक रुझान

सारणी 2. प्रमुख संकेतकों में प्रतिशत परिवर्तन और आर्थिक व्याख्या

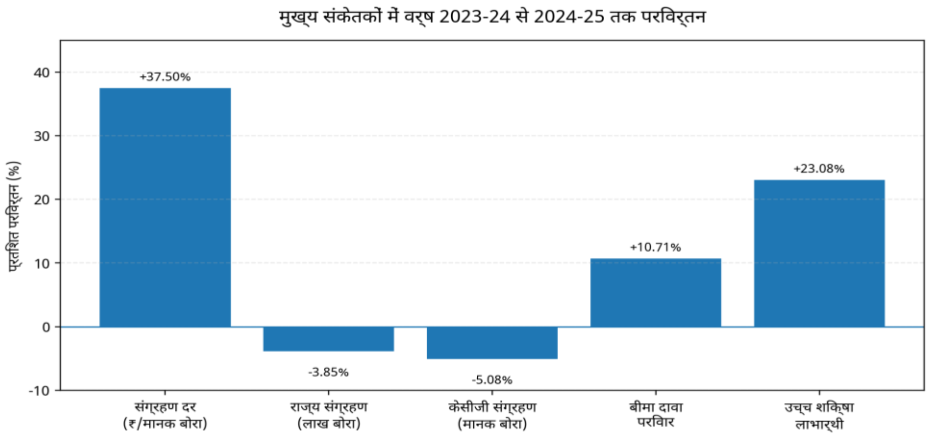

चित्र 1. चयनित संकेतकों में 2023-24 से 2024-25 तक प्रतिशत परिवर्तन

7.2 आंकड़ों की मुख्य विवेचना

- पारिश्रमिक वृद्धि: संग्रहण दर ₹4,000 से ₹5,500 प्रति मानक बोरा होने से 37.50% की वृद्धि हुई। यह परिवर्तन संग्रहणकर्ता परिवारों की क्रय शक्ति और ग्रामीण नकदी प्रवाह को बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण है।
- संग्रहण मात्रा: KCG जिले में संग्रहण मात्रा 29,500 से घटकर 28,000 मानक बोरा हुई। मात्रा में कमी का संबंध मौसम, पत्तों की गुणवत्ता और स्थानीय उपलब्धता से जोड़ा जा सकता है।
- सामाजिक सुरक्षा: बीमा दावा लाभान्वित परिवारों की संख्या 112 से बढ़कर 124 हुई, जो योजना के प्रशासनिक क्रियान्वयन में सुधार का संकेत देती है।

© Shiksha Samvad | Received: 25 May-2026 | Accepted: 01 June - 2026 | Published: 05 June - 2026

- शिक्षा सहायता: उच्च शिक्षा सहायता के लाभार्थियों की संख्या 195 से 240+ तक बढ़ना बताता है कि कल्याणकारी योजनाएं परिवारों के मानव पूंजी निर्माण में योगदान दे रही हैं।
- सुरक्षा उपकरण: चरण पादुका योजना के अंतर्गत 32,000 जोड़ी वितरण वन क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों को कांटे, पत्थर, सांप-बिच्छू और अन्य शारीरिक जोखिमों से सुरक्षा देने की दिशा में उपयोगी कदम है।

8. परिकल्पनाओं की प्रवृत्ति-आधारित व्याख्या

परिकल्पना	उपलब्ध प्रमाण/संकेत	व्याख्या	प्रवृत्ति-आधारित निष्कर्ष
H1: आय का सकारात्मक प्रभाव	संग्रहण दर में 37.50% वृद्धि	प्रति मानक बोरा आय में सीधा सुधार	H1 को समर्थन मिलता है
H1: शिक्षा सहायता का प्रभाव	उच्च शिक्षा लाभार्थी 195 से 240+	शिक्षा सहायता से नामांकन/लाभार्थी संख्या में वृद्धि	H1 को समर्थन मिलता है
H1: बीमा का सुरक्षात्मक प्रभाव	दावा निपटान 112 से 124 परिवार	संकट में परिवार को आर्थिक संरक्षण	H1 को समर्थन मिलता है

सारणी 3. परिकल्पनाओं की प्रवृत्ति-आधारित व्याख्या

यहां निष्कर्ष प्रवृत्ति-आधारित हैं। यदि भविष्य में पर्याप्त नमूना आकार और परिवार-स्तरीय आय-व्यय आंकड़े उपलब्ध हों, तो t-test, chi-square या regression analysis जैसे सांख्यिकीय परीक्षणों द्वारा परिकल्पनाओं का अधिक कठोर परीक्षण किया जा सकता है।

9. प्रमुख निष्कर्ष (Major Findings)

- तेन्दूपत्ता संग्रहण KCG जिले के वनाश्रित परिवारों के लिए मौसमी रोजगार और नकद आय का प्रमुख स्रोत है।
- संग्रहण दर में ₹1,500 प्रति मानक बोरा की वृद्धि से संग्रहणकर्ता परिवारों की आय क्षमता में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है।
- संग्रहण मात्रा में हल्की कमी के बावजूद बढ़ी हुई दरों ने आय प्रभाव को आंशिक रूप से संतुलित किया।
- बीमा दावा निपटान में वृद्धि सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की उपयोगिता को दर्शाती है।
- उच्च शिक्षा सहायता और मेधावी छात्र प्रोत्साहन योजनाएं वनाश्रित परिवारों में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर रही हैं।
- चरण पादुका योजना का पुनः संचालन संग्रहण कार्य से जुड़े शारीरिक जोखिमों को कम करने में सहायक है।

10. समकालीन चुनौतियां एवं जोखिम

चुनौती	प्रभाव	संभावित समाधान
मौसमी अनिश्चितता	बेमौसम बारिश, अत्यधिक तापमान और जलवायु परिवर्तन से पत्तों की गुणवत्ता प्रभावित होती है।	समयबद्ध संग्रहण कैलेंडर, स्थानीय मौसम सूचना और वैज्ञानिक प्रशिक्षण
शारीरिक जोखिम	जंगल में कांटे, पत्थर, सांप-बिच्छू और जंगली जीवों से खतरा रहता है।	चरण पादुका, दस्ताने, प्राथमिक चिकित्सा किट और बीमा कवरेज का विस्तार
भंडारण समस्या	प्राथमिक स्तर पर सूखा/वैज्ञानिक भंडारण न होने से पत्तों की गुणवत्ता घट सकती है।	स्थानीय dry storage, grading platform और नमी नियंत्रण व्यवस्था

मूल्य संवर्द्धन की कमी	तेन्दूपत्ता का उपयोग बीड़ी उद्योग तक सीमित रहने से वैकल्पिक आय के अवसर कम हैं।	औषधीय/औद्योगिक उपयोगों पर शोध, SHG आधारित प्रसंस्करण और बाजार संपर्क
सूचना की कमी	कुछ संग्राहकों तक योजना जानकारी समय पर नहीं पहुंचती।	ग्राम-स्तरीय शिविर, मोबाइल संदेश और समिति-स्तरीय सूचना पट्ट

सारणी 4. तेन्दूपत्ता संग्रहण से जुड़ी प्रमुख चुनौतियां एवं समाधान

11. चर्चा (Discussion)

तेन्दूपत्ता संग्रहण की आर्थिक भूमिका को समझने के लिए केवल संग्रहण मात्रा देखना पर्याप्त नहीं है। वास्तविक प्रभाव संग्रहण दर, भुगतान की समयबद्धता, योजना कवरेज, बीमा सुरक्षा और परिवारों की शिक्षा-संबंधी प्रगति से मिलकर बनता है। KCG जिले के आंकड़ों से स्पष्ट है कि पारिश्रमिक वृद्धि ने संग्रहणकर्ताओं के आय-स्रोत को अधिक आकर्षक बनाया है, जबकि शिक्षा और बीमा योजनाओं ने सामाजिक सुरक्षा को मजबूत किया है।

एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि संग्रहण मात्रा में कमी आने पर भी आय प्रभाव अनिवार्य रूप से नकारात्मक नहीं होता, क्योंकि मजदूरी दर में वृद्धि परिवारों की प्रति इकाई आय बढ़ाती है। इससे ग्रामीण बाजारों में खर्च क्षमता, दैनिक उपभोग और स्थानीय अर्थव्यवस्था में नकदी प्रवाह बढ़ सकता है।

हालांकि, दीर्घकालिक स्थिरता के लिए केवल दर वृद्धि पर्याप्त नहीं है। गुणवत्ता सुधार, भंडारण, मूल्य संवर्द्धन, डिजिटल भुगतान पारदर्शिता, सुरक्षा उपकरण और वैकल्पिक उत्पाद-विकास को समान महत्व देना होगा। यदि स्थानीय SHGs और सहकारी समितियों को प्रसंस्करण एवं ग्रेडिंग में प्रशिक्षित किया जाए, तो तेन्दूपत्ता का लाभ अधिक व्यापक रूप से संग्रहणकर्ता परिवारों तक पहुंच सकता है।

12. सुझाव (Recommendations)

- संग्रहणकर्ताओं को समय पर भुगतान सुनिश्चित करने के लिए DBT प्रणाली की निगरानी और ग्राम-स्तरीय भुगतान सत्यापन को मजबूत किया जाए।
- तेन्दूपत्ता की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए ग्राम/समिति स्तर पर वैज्ञानिक सुखाने, छंटाई और भंडारण सुविधा विकसित की जाए।
- चरण पादुका के साथ दस्ताने, प्राथमिक चिकित्सा किट और मौसम-आधारित सुरक्षा निर्देश अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराए जाएं।
- संग्रहणकर्ता परिवारों के बच्चों के लिए शिक्षा सहायता, करियर परामर्श और छात्रवृत्ति आवेदन सहायता शिविर आयोजित किए जाएं।
- तेन्दूपत्ता के औषधीय, जैव-उत्पाद, हस्तशिल्प या अन्य गैर-पारंपरिक उपयोगों पर स्थानीय विश्वविद्यालयों/संस्थानों के सहयोग से शोध किया जाए।
- महिला संग्राहकों और स्व-सहायता समूहों को मूल्य संवर्द्धन, वित्तीय साक्षरता और लघु उद्यम प्रशिक्षण से जोड़ा जाए।
- भविष्य के अध्ययन में परिवार-स्तरीय आय, खर्च, ऋण, शिक्षा और स्वास्थ्य संकेतकों को शामिल कर सांख्यिकीय मॉडलिंग की जाए।

13. अध्ययन की सीमाएं (Limitations)

अध्ययन उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। विस्तृत परिवार-स्तरीय आय-व्यय, नमूना आकार और दीर्घकालिक पैनल डेटा उपलब्ध होने पर निष्कर्षों को अधिक सांख्यिकीय मजबूती दी जा सकती है। इसके अतिरिक्त, पत्तों की गुणवत्ता, वास्तविक भुगतान समय और ग्राम-वार भंडारण व्यवस्था जैसे संकेतकों को भविष्य के अध्ययन में अधिक विस्तार से शामिल किया जाना चाहिए।

14. निष्कर्ष (Conclusion): प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि तेन्दूपत्ता संग्रहण KCG जिले के वनाश्रित परिवारों के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक आधार है। संग्रहण दर में वृद्धि ने संग्राहकों की प्रति इकाई आय को बढ़ाया है, जबकि बीमा, शिक्षा सहायता और चरण पादुका जैसी योजनाओं ने सामाजिक सुरक्षा और मानव पूंजी विकास को प्रोत्साहित किया है।

वर्ष 2023-24 से 2024-25 के तुलनात्मक आंकड़े दर्शाते हैं कि संग्रहण मात्रा में हल्की कमी होने पर भी पारिश्रमिक वृद्धि और कल्याणकारी योजनाओं के कारण समग्र आर्थिक प्रभाव सकारात्मक दिशा में है। अतः तेन्दूपत्ता संग्रहण को केवल बीड़ी उद्योग से जुड़ी गतिविधि न मानकर ग्रामीण विकास, सामाजिक सुरक्षा और वन-आधारित आजीविका नीति के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में देखा जाना चाहिए।

नीति-स्तर पर गुणवत्तापूर्ण भंडारण, सुरक्षा उपकरण, शिक्षा सहायता, मूल्य संवर्द्धन और स्थानीय प्रसंस्करण व्यवस्था को बढ़ावा देकर KCG जिले में तेन्दूपत्ता अर्थव्यवस्था को अधिक सतत, सुरक्षित और लाभकारी बनाया जा सकता है।

15. आभार (Acknowledgement)

लेखक जिला वनोपज सहकारी यूनियन, प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों, स्थानीय संग्रहणकर्ताओं तथा क्षेत्रीय स्तर पर उपलब्ध जानकारी प्रदान करने वाले सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करता/करती है।

16. हितों का टकराव (Conflict of Interest)

लेखक/लेखकों द्वारा किसी प्रकार के हितों के टकराव की घोषणा नहीं की जाती है।

17. संदर्भ सूची (References)

[1] वार्षिक प्रतिवेदन, जिला वनोपज सहकारी यूनियन मर्यादित, खैरागढ़, वित्तीय वर्ष 2023-24 एवं 2024-25.

[2] प्रतिवेदन, प्राथमिक वनोपज सहकारी समिति मर्यादित, ईटार, वर्ष 2023-24.

[3] छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ मर्यादित. आधिकारिक पोर्टल: www.tendupattasangrahan.in

[4] शोधगंगा: भारतीय शोधप्रबंधों का डिजिटल भंडार. www.shodhganga.in

[5] Jyotish, S., & Sathyapalan, J. (2005). Households dependence on protected forest: Evidence from the Western Ghats. Indian Journal of Agricultural Economics, 60(1), 60–70.

[6] उसरेठे, मुकेश कुमार. तेन्दूपत्ता संग्रहण कार्य में संलग्न पक्षों की आर्थिक स्थितियों का मूल्यांकन: छिन्दवाड़ा जिले की तामिया एवं सौंसर तहसील के विशेष संदर्भ में. अप्रकाशित शोधप्रबंध.

[7] साहू, दीप्ति. (2025). छत्तीसगढ़ में तेंदूपत्ता संग्रहण एवं विपणन का विश्लेषणात्मक अध्ययन. आर्थिक शोध जर्नल, 4, 112–125.

Cite this Article:

पूर्वेश कुमार बांधव[1]*, हिरेंद्र ठाकुर[1], आशीष गहने[2] एवं गोपाल कृष्ण यादव[2], "तेन्दूपत्ता संग्रहण के आर्थिक कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई (KCG) जिले की संग्रहण समितियों के विशेष संदर्भ में)" Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, Pp.53-60, June-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

पूर्वेश कुमार बांधव[1]*, हिरेंद्र ठाकुर[1], आशीष गहने[2] एवं गोपाल कृष्ण यादव[2]

For publication of research paper title

तेन्दूपत्ता संग्रहण के आर्थिक कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई (KCG) जिले की संग्रहण समितियों के विशेष संदर्भ में)

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.06